

\_^\_ सादा जीवन सुख से जीना \_^\_

सादा जीवन सुख से जीना, अधिक इतरना ना चाहिए ।

भजन सार है इस दुनिया में, कभी बिसरना ना चाहिए ॥

मन में भेदभाव नहीं रखना, कौन पराया कौन अपना ।

इश्वर से सच्चा नाता है, और सभी झूठा सपना ।

गर्व गुमान कभी ना करना, गर्व रहे न गले बिना ।

कौन यहाँ पर रहा सदा से, कौन रहेगा सदा बना ।

सभी भूमि गौपाललाल की, व्यर्थ भटकना ना चाहिए ॥ भजन सार ॥

दान, भोग और नाश तीन गती, धन की ना चौथी कोई ।

जतन करंता पच पच मरगा, साथ ले गया ना कोई ।

इक लख पूत सवा लख नाती, जाणे जग में सब कोई ।

रावण के सोने के लंका, साथ ले गया न वो भी ।

सूक्ष्म खाणा खूब बांटना, भर भर धरना ना चाहिए ॥ भजन सार ॥

भोग्या भोग घटे ना तृष्णा, भोग भोग फिर क्या करना ।

चित्त में चेतन करे च्यानणों, धन माया का क्या करना ।

धन से भय विपदा नहीं भागे, झूठा भरम नहीं धरना ।

धनी रहे चाहे हो निर्धन, आखिर है सबको मरना ।

कर संतोष सुखी हो मरिये, पच पच मरणा ना चाहिए ॥ भजन सार ॥

सुमिरण करें सदा इश्वर का, साधू का सम्मान करे ।

कम हो तो संतोष करे नर, ज्यादा हो तो दान करे ।

जब जब मिले भाग से जैसा, संतोषी ईमान करे ।

आडा टेढ़ा घणा बखेड़ा, जुल्मी बेईमान करे ।

निर्भय जीणा निर्भय मरणा, शम्भू डरना ना चाहिए ॥ भजन सार ॥

जय श्री नाथजी की .....